classmate

Date

Page

डा॰ अनिता ओझा

एसोसिएट प्रोफेसर

विषय – संस्कृत

कक्षा – बी॰ ए॰ तृतीय वर्ष

प्रश्नपत्र – प्रथम

प्रश्नपत्र का शीर्षक – काव्य

इकाई I – शिशुपालवधम् प्रथमसर्ग श्लोक 1-35

इकाई II " " श्लोक 36-75

इकाई III शिवराजविजय (प्रथम निश्वास)

"शिवराजविजय"

ग्रन्थकार - श्रीमद् अम्बिकादत्त व्यास

जीवन-परिचय (ग्रन्थकार)

आधुनिक संस्कृत रचनाकारों में सर्वाधिक ख्यातिप्राप्त एवं अलौकिक प्रतिभासम्पन्न साहित्याचार्य अम्बिकादत्त व्यास जी हैं। आपने 'बिहारी बिहार' में संक्षिप्त निज-वृत्तान्त स्वयं लिखा है। जिसके अनुसार राजस्थान में जयपुर से करीब 22 मील पूर्व की ओर 'रावत जी का धूला' नामक अत्यन्त प्रसिद्ध गाँव है। वह गाँव चारों ओर से पर्वतों से घिरा है तथा प्राकृतिक वातावरण से सुसम्पन्न है। राजा मानसिंह के दूसरे पुत्र दुर्जनसिंह ने धूला को ही अपने राज्य की राजधानी बनाया था। इसी ठाकुर वंश में आगे चलकर एक राजा देवलसिंह हुए। इनके राजपण्डित श्री गोविन्दराम जी थे। ये सुसंस्कृतज्ञ तथा प्रतिभा के धनी थे। आप आदि गौड़ पराशरगोत्रीय यजुर्वेदी भीडा वंश से सम्बन्धित थे। आपके प्रपौत्र पं. राजारामजी को तीर्थयात्रा तथा देशाटन विशेष प्रिय था।

सम्पूर्ण भारत भ्रमण करते हुए पं. राजाराम जी काशी पहुँचे। वहाँ के पण्डित-मण्डली में पं. राजाराम जी शीघ्र ही अत्यन्त लोकप्रिय हो गये। आपसे काशी के पण्डित इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने आपको वापस धूला नहीं जाने दिया। अतः आप काशी के मानमन्दिर मुहल्ले में रहने लगे।

पं. राजाराम जी के दो पुत्र थे— दुर्गादत्त और देवीदत्त। पण्डित अम्बिकादत्त व्यास के पिताजी का नाम दुर्गादत्त था। वे कभी जयपुर रहते थे कभी बनारस। व्यास जी का जन्म जयपुर में ही चैत्र शुक्ल अष्टमी सं. 1915 में हुआ। आप प्रारम्भ से ही धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। संस्कृत व हिन्दी में आपकी विशेष रुचि थी। उन दिनों बालविवाह-प्रथा विशेष रूप से प्रचलित थी। अतः आपका भी विवाह तेरह वर्ष की अल्पायु में ही हो गया।

पं. अम्बिकादत्त व्यास जी के पिताजी कवि, विद्वान और व्यवहारकुशल व्यक्ति थे। अतः उन्होंने व्यास जी को बाल्यकाल से ही अक्षरारम्भ के साथ ही उन्हें अमरकोष, शब्दधातुरूपावली और व्यावहारिक पदार्थों के संस्कृत नाम मौखिक रूप से कण्ठस्थ कराने प्रारम्भ कर दिये। वे स्वयं भी

classmate
Date
Page

कुशाग्र बुद्धि और विलक्षण प्रतिभासम्पन्न थे, अतः शीघ्र ही संस्कृत में इनका ज्ञान प्रौढ़ होता गया। फलतः दस वर्ष की अवस्था से ही वे कविता करने लगे। पिता जी स्वयं विख्यात कवि थे, एतावता उनके साथ रहने से अन्य कवियों से भी इनका सम्पर्क बढ़ा। इसी सिलसिले में वे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सम्पर्क में आये। उन्होंने इनका इतना उत्साह संवर्धन किया कि वे सुकवि नाम से विख्यात हो गये। इनके ग्यारह वर्ष की अवस्था में माता का तथा सत्रहवें वर्ष में पिता का देहान्त होने से व्यास जी पर गृहस्थी का भार आ पड़ा। संवत् 1937 में इन्होंने साहित्याचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की, साथ ही अंग्रेजी का भी ज्ञान अर्जित किया। वक्तृता, शास्त्रार्थ और कविता करने में व्यास जी को इतना अभ्यास हो गया था कि वे एक घड़ी (24 मिनट) में सौ श्लोक बना लेते थे। इसलिए सं. 1938 में काशी ब्रह्मामृतवर्षिणी सभा ने इन्हें 'घटिका-शतक' की उपाधि प्रदान की। सं. 1940 में मधुबनी संस्कृत स्कूल के अध्यक्ष होकर बिहार गये। वहाँ मैथिली भाषा का अध्ययन किया और संस्कृत सीखने की अभिनव प्रणाली का आविष्कार किया। सं. 1943 में ये मुजफ्फरपुर जिला स्कूल के हेडपण्डित होकर गये, सं. 1944 में भागलपुर

के। सं. 1950 में ये अवकाश लेकर भारत-भ्रमण पर निकले। पूरे देश में इनके सम्मान में सभाएं हुई। अन्त में काशी की महासभा में इन्हें भारतरत्न की उपाधि मिली। इनके घटिका-शतक और शतावधान की विलक्षण शक्ति से बड़े-बड़े विद्वान भी चमत्कृत रह जाते थे। सं. 1957 में इनका देहावसान हो गया।

शिवराजविजय

उन्नीसवीं और बीसवीं शती में लिखे गये गद्यकाव्य आधुनिक उपन्यास विधा में अम्बिकादत्त व्यास कृत शिवराजविजय का संस्कृत साहित्य के इतिहास में अभिट स्थान है। व्यास जी हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार भारतेन्दु के समकालीन थे तथा उनके मंडल में सम्मिलित रहे। शिवराजविजय की रचना 1898 ई० में हुई। शिवराजविजय बंगला उपन्यास की धारा से प्रेरित है।
शिवराजविजय का कथानक ऐतिहासिक है। इसमें महाराष्ट्र केशरी वीर शिवाजी के चरित्र का कुशलतापूर्ण चित्रण है। शिवराज-विजय व्यास जी की लोकप्रिय गद्य-रचना है जिसे संस्कृत-वाङ्मय के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास होने का सौभाग्य प्राप्त है।

शिवराजविजय पं. अम्बिकादत्त व्यास की कला की सुन्दर सृष्टि है। यह लेखक की परिपक्व प्रज्ञा तथा प्रौढ़ प्रतिभा का परिचायक ग्रन्थ है। साहित्यिक दृष्टि से शिवराजविजय में अनेक महत्वपूर्ण गुणों का समावेश दृष्टिगोचर होता है —

1. कथावस्तु —

शिवराजविजय की कथावस्तु ऐतिहासिक है। इसका कथानक इतिहास-प्रसिद्ध महाराष्ट्रशिरोमणि शिवाजी की दस वर्षों की जीवनी पर आधारित है। इसका कथानक मातृभूमि के प्रति प्रेम, राजा की प्रजावत्सलता, प्रजा की राजभक्तिपरायणता, धार्मिकता तथा राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है। ऐतिहासिकता, देशभक्ति, राजभक्ति, मातृभूमिभक्ति आदि भावों का इस अनुपम कृति में सुन्दर समन्वय हुआ है।

पं. अम्बिकादत्त व्यास ने ऐसे समय में शिवराजविजय लिखकर राष्ट्रीय प्रेम से परिपूर्ण महाराज शिवाजी का पावन आदर्श हमारे सम्मुख रखा था, जबकि 1857 में प्रथम स्वाधीनता संग्राम के विफलता के बाद जनता में भय तथा आतंक व्याप्त था। उस समय शिवराजविजय ने अपने देशभक्तिपूर्ण कथानक के माध्यम से जनता में चेतना का कार्य किया है।

इस कृति में प्राचीन गौरव की भी घोषणा की गई है —

'अस्मिन्नेव भारतवर्षे यायजूकैः राजसूयादियज्ञाः व्ययाजिषत, कदाचिदिहैव वर्षा-वातातपहिमसहानि तपांसि अताप्सिषत'।

महाकवि बाण के हर्षचरित की भाँति शिवराजविजय का कथानक भी हमें समय की गतिविधि से परिचित कराता है।

2. कथावस्तु-संघटन —

शिवराजविजय की कथावस्तु में पाश्चात्य एवं पौरस्त्य शिल्प का समन्वय है। शिवराजविजय में दो स्वतन्त्र काव्यधाराएँ एक-दूसरे के समानान्तर चलती हैं किन्तु ऐसा नहीं है कि वे एक-दूसरे की अपेक्षा नहीं रखतीं, वे तो एक-दूसरे की पूरक हैं। पं. अम्बिकादत्तव्यास ने अपने ग्रन्थ में कल्पना तथा इतिहास, आदर्श तथा यथार्थ दोनों का उचित तथा सुन्दर निर्वाह किया है।

3. भाषा-शैली —

भावों को अभिव्यक्त करने का भाषा ही सशक्त माध्यम है। भाषा की दृष्टि से शिवराजविजय अत्यन्त आकर्षक कृति है। इसमें संस्कृत भाषा का वास्तविक रूप प्रस्फुटित हुआ है। मधुर

पद विन्यास से तथा क्लिष्टता और कृत्रिमता के सर्वथा अभाव से शिवराजविजय स्वाभाविक तथा सहजसुन्दर है, सर्वत्र सरल तथा प्रसाद युक्त है। शिवराजविजय में ओज, प्रसाद एवं माधुर्य – इन तीनों गुणों का समुचित समन्वय हुआ है।

५. वर्णन - कौशल –

व्यास जी की वर्णनशैली बड़ी अद्भुत है, शान्त गौरव से ओत-प्रोत एवं आकर्षक है। शिवराजविजय के वर्णन बड़े सजीव तथा श्लाघ्य हैं। कहीं महाराष्ट्र-शिविर है, तो कहीं विषम गिरि-दुर्गों पर आक्रमण का वर्णन। कहीं मुगल-परिवार का दृश्य है, तो कहीं सैन्य-सज्जा है।

प्रकृति के संश्लिष्ट रूप के वर्णन का एक उदाहरण देखिए –

'कदलीदलकुञ्जाधिष्ठितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वत: परमपवित्रपानीयं, परस्सहस्रपुण्डरीक-पटलपरिलसितं, पतगिकुलकूजितपूजितं पय:पूरितं सर आसीत्। दक्षिणतश्चैको निर्झरझर्झरध्वानितदिगन्तर:, फलपटलास्वाद-चलित-चञ्चुपतङ्कुलाक्रमणाऽऽधिक-विनतशाखशाखिसमूलव्याप्त: सुन्दर-कन्दर: पर्वतखण्ड आसीत्।

अत: पं० अम्बिकादत्त व्यास की वर्णन-प्रणाली सरल, नैसर्गिक तथा प्रवाहपूर्ण है।

classmate
Date
Page

5. रस - अलंकार -

शिवराजविजय वीर रस प्रधान गद्यकाव्य है। वीर रस इस उपन्यास का प्रमुख रस है। जहाँ युद्ध आदि के प्रसङ्ग आये हैं, वहाँ वीर रस के साथ-साथ रौद्र, भयानक, वीभत्स तथा अद्भुत रस स्वतः आविर्भूत हो उठे हैं। जहाँ कहीं श्रृंगार रस का वर्णन आया है, वहाँ वह सात्विक तथा पूर्ण संयत है और इसमें स्वस्थ प्रेम के दर्शन होते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि शिवराजविजय में नवों रस का वर्णन बड़ी चारुता तथा दक्षता से किया गया है।

अलंकारों के प्रयोग में व्यास जी ने अपनी सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय दिया है। उनका गद्य अत्यधिक अलंकारों के भार से मन्थर गति से चलने वाला नहीं है, अपितु अपने सहज सौन्दर्य से सहृदयों के चित्त को समाकृष्ट करने वाला है। उपमा, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त आदि अलङ्कारों के प्रयोग में उनकी दक्षता एवं व्यापक दृष्टि का परिचय मिलता है।

6. सामाजिक -चित्रण -

पं. अम्बिकादत्तव्यास ने अपने ग्रन्थ शिवराजविजय में तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था का सफल चित्रण किया है। हिन्दू जाति की दयनीय स्थिति, मुसलमानों

के अत्याचारों, दमनकारी प्रवृत्तियों आदि का यथार्थ चित्रण किया है। प्रथम उच्छ्वास से ही एक मुसलमान युवक द्वारा एक ब्राह्मण-कन्या का अपहरण तत्कालीन दुर्व्यवस्था तथा असीम अत्याचारों का परिचय कराता है। मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों का एक उदाहरण प्रस्तुत है —

'अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विकीर्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धूय धूमध्वजेषु ध्मायन्ते, पुराणानि विलुप्य पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भर्ज्यन्ते, क्वचित् मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचित् तुलसीवनानि छिद्यन्ते, क्वचिद् दारा अपह्रियन्ते, क्वचित् धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचित् आर्तनादः, क्वचित् रुधिरधाराः, क्वचित् अग्निदाहः, क्वचित् गृहनिपातः' इत्यादि।

सन्दर्भ सूची सामग्री

① संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास
– डॉ राधावल्लभ त्रिपाठी

② शिवराजविजय: (प्रथम निश्वास)
– डॉ. रमाशंकर